संबंधकारक

षष्ठी शेषे

जो बात और विभक्तियों से नहीं बतलायी जा सकती, उसको बतलाने के लिए षष्ठी का प्रयोग होता है।

स्वामी तथा भृत्य, जन्य तथा जनक, कार्य तथा कारण इत्यादि सम्बन्ध दिखाने के लिए षष्ठी काम में लायी जाती है। उसका क्रिया से साक्षात् सम्बन्ध नहीं होता, जैसा कि प्रथमा, द्वितीया आदि विभक्तियों का होता है;

जैसे—यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा (जिसके स्वयं बुद्धि नहीं है।)

स्खलनं मनुष्याणां धर्मः (गलती करना मनुष्य का धर्म है)।

ये नो गृहाः (ये हमारे घर है।)

विशेष

ध्यान रहे कि संस्कृत में षष्ठी उन सभी सम्बन्धों और अर्थों का बोध नहीं करा सकती जिन्हें दिखाने के लिये हिन्दी में "का, की, के," प्रयुक्त किये जाते हैं। जैसे- 'एक सोने का वर्तन' का अनुवाद प्रायः समस्त पद "हेमपात्रम्" अथवा प्रत्यय निष्पन्न पद 'हैम' द्वारा 'हैमपात्रम्' होता है, परन्तु 'हेम्नः पात्रम्' कभी नहीं होता।

इसी प्रकार मिट्टी का बर्तन, 'मृद्भाण्डम्' अथवा मृण्मयंभाण्डम्' होता है, परन्तु 'मृदः भाण्डम्' नहीं होता।

बड़े मूल्य की मुक्ता। 'महार्घं मुक्ताफलम्' ।

शक्ति वाला पुरुष 'सबलो नरः' न कि 'बलस्य नरः'।

इसी प्रकार 'वैशाख के महीने में' 'वैशाखेमासे' न कि 'वैशाखस्य मासे' होता है।

बम्बई का शहर 'मोहमयी पुरी' अथवा 'मोहमयीनामपुरी' न कि 'मोहमय्या: पुरी' होता है। क्योंकि मोहमयी और पुरी में समानाधिकरण संबंध है।

षष्ठी हेतुप्रयोगे

हेतु (प्रयोजन) शब्द के साथ षष्ठी होती है,

यथा-अन्नस्य हेतोः वसति (अन्न के लिए रहता है)।

यहाँ रहने का हेतु या प्रयोजन 'अन्न' है, अतः अन्न और हेतु में षष्ठी हुई।

अध्ययनस्य हेतोः वाराणस्यां तिष्ठति (अध्ययन के लिए बनारस में ठहरा है।)

यहाँ ठहरने का प्रयोजन या कारण 'अध्ययन' है, अतः 'अध्ययन' और 'हेतु' में षष्ठी हुई।

सर्वनाम्नस्तृतीया च

यदि हेतु शब्द के साथ सर्वनाम का प्रयोग हो तो सर्वनाम और हेतु शब्द, दोनों में तृतीया, पंचमी या षष्ठी होती है,

यथा-

केन हेतुना अत्र वसति,

कस्मात् हेतोः अत्र वसति

अथवा कस्य हेतोः अत्र वसति ।

इसी प्रकार-

तेन हेतुना, तस्मात् हेतोः, तस्य हेतोः आदि ।

निमित्तपर्यायप्रयोगे सर्वासां प्रायदर्शनम् (वा०)

निमित्त अथवा उसके अर्थवाचक शब्दों (कारण, प्रयोजन, हेतु आदि) के प्रयोग होने पर सर्वनाम एवं निमित्तवाचक शब्दों में प्रायः समस्त विभक्तियाँ होती हैं,

यथा

को हेतुः	इसी प्रकार	यत् प्रयोजनम्
कं हेतुम्	किं निमित्तम्	येन प्रयोजनेन
केन हेतुना	केन निमित्तेन	यस्मै प्रयोजनाय
कस्मै हेतवे	कस्मै निमित्ताय	आदि
कस्मात् हेतोः	आदि।	
कस्य हेतोः		
कस्मिन् हेतौ		

वार्तिक में प्राय से तात्पर्य यह है कि सर्वनाम शब्द के प्रयोग न रहने पर भी प्रथमा द्वितीया को छोड़ कर अन्य विभक्तियाँ होती हैं,

यथा -

अध्ययेन	निमित्तेन	(अध्ययन के लिए)
अध्ययनाय	निमित्ताय	(अध्ययन के लिए)